कांगड़ा लघु चित्रों में नल–दमयन्ती का सौंदर्यात्मक विवेचन

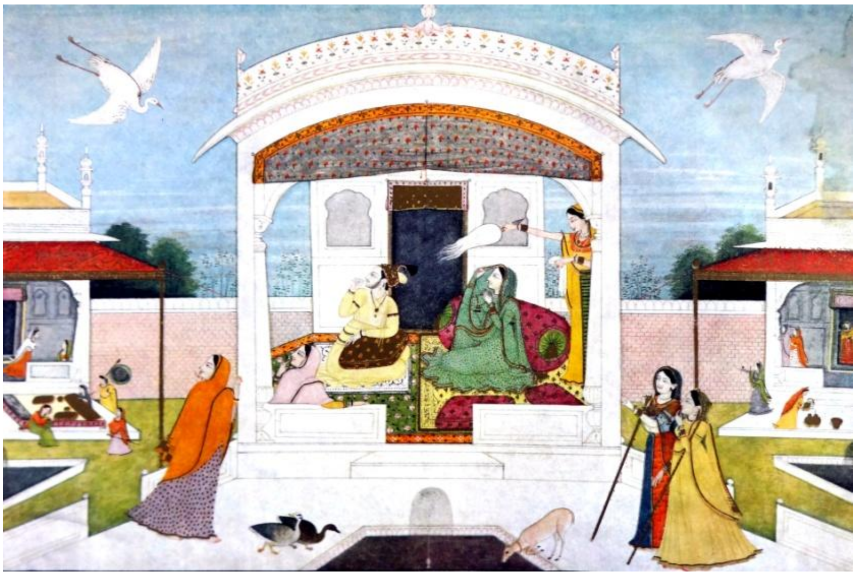

डी.ई.आई.(डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा से चित्रकला में

पी–एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशक :–

प्रो. अश्विनी कुमार शर्मा

ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग,

कला संकाय

शोध छात्रा :–

सोनाली गुप्ता

ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग,

कला संकाय

संकाय प्रमुख :–

प्रो. जे.के. वर्मा

अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग,

कला संकाय

विभागध्यक्ष :–

प्रो. रागिनी रॉय

ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग,

कला संकाय

2017

कांगड़ा लघु चित्रों में नल–दमयन्ती का सौन्दर्यात्मक विवेचन

विषय–प्रवेश

शोध संकल्पना

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

परिकल्पना

उद्देश्य

चर

कार्य प्रणाली –

1– अनुसंधान अभिकल्प

2– प्रदत्त संकलन

अ– प्राथमिक

ब– द्वितीयक स्त्रोत

3– प्रतिदर्श आकार

4– प्रदत्तों के एकत्रीकरण की प्रविधि

5– सीमायें

शोध संकल्पना

कला का इतिहास उतना ही पुराना कहा जा सकता है। जितना कि मानव सभ्यता के विकास का इतिहास है। कला शब्द का अर्थ अत्यन्त व्यापक है।

भारतीय चित्रकला के प्राचीन इतिहास का लेखा–जोखा मानव सभ्यता के इतिहास के सम कक्ष शैला चित्रों से प्रारम्भ होता है। जब आदि मानव ने अपनी अभिव्यक्ति को भाषा और लिपि के अभाव में चित्रों के माध्यम से व्यक्त करना प्रारम्भ किया था। इनके उदाहरण हमें मिर्जापुर, से संघनपुर, होशंगाबाद, भीमबेठका, भानपुरा व भोपाल आदि से प्राप्त होते है।

इतिहास मे आरम्भिक काल के पैमाने पर हजारों वर्ष का समय भी बहुत थोड़ा होता है। सभ्यता के विकास के युगों के मध्य दूरी बहुत बड़ी होती है। उसी के अनुरूप भरतीय चित्रकला का दूसरा सोपान जिसके अवशेषों के माध्यम से हमें प्रमाणिक सामाग्री उपलब्ध होती है, वह सिन्धु घाटी युग की है। कला के विषय में हमारा ज्ञान विभिन्न धर्म ग्रन्थों में वर्णित उल्लेखों में प्राप्त होता है। यह युग वास्तव में भारत के बौद्धिक व कलात्मक का उत्कर्ष काल था। वेद, पुराण, उपनिषद एवं ब्राह्मण ग्रन्थों में कला सम्बन्धी उल्लेख एवं शास्त्रीय ज्ञान का भण्डार निहित है। जिसकी जानकारी प्रबुद्ध समाज को एक लम्बे अन्तराल के बाद ही हो सकी है।

विभिन्न राजवंशों ने भारत में मूर्तिकला, स्थापत्य एवं चित्रकला का बहुमुखी विकास किया जिसका आधार देश के अनेक धर्म, मतमतान्तर एवं नित–नवीन विकसित सम्प्रदाय हैं।

प्राचीन काल में नाट्यशालायें, देव मंदिर एवं राजभवनों के बाहरी व भीतरी प्रकोष्ठों की दीवारों पर चित्रांकन किया जाता था। वैदिककालीन, बौद्धकालीन, विनयपिटक, संयुक्त निकाय, रामायण, शिल्परत्नम मेघदूत, रघुवंश, कादम्बरी आदि अन्य लिखित सामग्री से ज्ञात होता है कि भित्ति चित्रण सारे देश में व्याप्त थे। इसके उपरान्त जैन पोथी चित्रों एवं ताड़पत्रीय लघु चित्रों ने एक युग का सूत्रपात किया था जो आगे चलकर मालवा चित्रों के रूप में विकसित हुए। मुगलों के आगमन के साथ ईरानी शैली की बारीकि एवं नफासत लिए चित्रों ने प्रारम्भिक मालवा चित्रों के साथ मिलकर अनेक स्थानीय विशेषताओं से युक्त विभिन्न शैलियों को जन्म दिया और इसी प्रकार हम यह मान सकते हैं कि यह लघु चित्रों का आरम्भिक काल था।

लघु चित्र बनाने की रूचि फैलते–फैलते पूरे भारत में फैल गई जिसमें मुगल, राजस्थानी व पहाड़ी प्रमुख शैलियां रहीं जिसमें मैं पहाड़ी शैली की विवेचना करूँगी। पहाड़ी चित्रकला लगभग 15000 वर्ग मील के क्षेत्र में फैली हुई है। पहाड़ी चित्रकला की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अत्यंत सम्पन्न है। पहाड़ी चित्रकला में काव्य, संगीत और चित्रकला का समन्वय संसार भर की कलाओं में एक अद्वितीय उपलब्धि है। चीन और जापान में भी हमें काव्य और चित्रकला के समन्वय का पता चलता है लेकिन पहाड़ी चित्रकला में तो काव्य, संगीत और चित्रकला के सुखान्त समन्वय के पीछे भारतीय संस्कृति का अत्यंत समृद्ध दर्शन है। डॉ. एम.एस.रंधावा के शब्दों में काव्य को चित्रकला में रूपान्तर ही कांगड़ा कला का अद्वितीय गुण है। काव्य की पीठिका में प्रवाहमान, लयात्मक रेखाओं ने कांगड़ा कला को गेयता दी है। सहज ही शांत संगीत कहा जा सकता है कि यह वह कला है जो मन को सुखकर प्रतीत होती है और आत्मा को ऊँचा उठाती है।

कांगड़ा के इतिहास में सन् 1775 से 1823 ई. तक का समय स्वर्णिम रहा। राजा संसार चंद वैष्णव धर्म के अनुयायी और कृष्ण भक्त थे। राजा के चित्रकारों ने कृष्ण लीला जैसे विषय को अपनी भरपूर रूचि–शुचि के अनुकूल चित्रित किया। कृष्ण से बढ़कर नायक उनकी दृष्टि में और कोई नहीं था यही कारण है कि समस्त पहाड़ी कलाकृतियों में कृष्ण ही छाये रहे। कृष्ण संबंधी अनेक कांगड़ा शैली के संसार भर के संग्रहालयों में देखे जा सकते हैं।

इस समय भक्ति आंदोलन अपनी उत्कृष्टता पर था। जयदेव द्वारा लिखित गीत गोविंद, बिहारी सतसई और भगवत् पुराण में भी कृष्ण जीवन की बहुविध लीला अत्यंत नयनाभिराम ढंग से प्रस्तुत की गई है। उसी समय केशवदास लिखित कविप्रिया, रसिकप्रिया एवं नल–दमयन्ती की प्रणय कथा पर भी चित्र कार्य हुआ। प्रेम का ऐसा भावमय, लयात्मक और कलात्मक चित्रण को देखकर कला समीक्षक डॉ. आनन्द कुमार स्वामी ने लिखा था कि जो प्रसिद्धि चीनी कलम में प्राकृतिक सौंदर्य चित्रण में प्राप्त हुई वही यहां प्रेम के चित्रण में एक उपलब्धि बन गई है।

जयदेव के गीत–गोविन्द, बिहारी सतसई, केशवदास व मतिराम की रचनाओं व भगवत् पुराण से प्रेरित चित्रकारों ने थोड़े ही समय में हजारों की संख्या में चित्र बनाकर एक चमत्कार कर दिखाया। राग–रागिनियों, नायक–नायिका भेद तथा समस्त श्रृंगारिक क्रियायें पहाड़ी कलम

की उभरती देह–यष्टि में समाई हुई थी। रेखाओं की कोमलता व एक नये तल–विन्यास ने पहाड़ी कलम को मौलिकता प्रदान की है। लघु चित्रों की सौंदर्यात्मक पद्धति उच्च कोटि की है। यह कृतियां भारतीय कला का गौरव बढ़ाने वाली हैं। मैंने अपने शोध कार्य कांगड़ा शैली में बने नल–दमयन्ती की प्रेम कथा पर आधारित लघु चित्रों पर केन्द्रित किया है।

विभिन्न रस, कलात्मक एवं सौंदर्यात्मक गुणों से युक्त इन लघु चित्रों का अध्ययन अवश्य ही कला के नये आयाम स्थापित करेगा जो भविष्य में शोधार्थियों और इस विषय से संबंध रखने वालों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगा।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

किसी भी विषय पर शोधकार्य करने से पहले उससे संबंधित तथ्यों का संकलन आवश्यक होता है। जिसमें सबसे महत्वपूर्ण शोध कार्य पर पूर्ववत् में किया गया शोध या उससे संबंधित साहित्य महत्वपूर्ण होता है जिसका पुनरावलोकन करके वर्तमान शोध को सारगर्भित एवं उपयोगी बनाया जा सकता है।

मैंने अपने शोध को तर्कपूर्ण तथा महत्वपूर्ण बनाने के लिए कुछ उल्लेखनीय पुस्तकों और साहित्यों का अध्ययन किया जैसे *'बी.एन. गोस्वामी'* द्वारा लिखित *'Pahari Painting of the Nal Damyanti Theme'* जिसमें मैंने नल–दमयन्ती के लघु चित्रों को बारीकी से देखा तथा इस विषय पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। इसके अतिरिक्त मैंने 'गोस्वामी' की एक और रचना *'Pahari Masters, Court Painters of Northern India'* का अध्ययन किया। जिसमें मैंने पहाड़ी कलाकारों तथा उनके रंग बनाने के तरीकों व प्राचीनता को जाना व समझा जिससे मुझे पहाड़ी चित्रकला के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त मैंने *'Onkar Rahi'* की *'Growth & Tradition of Pahari Miniatures Paintings', 'Pahari Paintings of an Ancient Romance' by 'Harsha V.Dahejia', Centers of Pahari Paintings' by 'Chandra Mani Singh'* और 'नल–दमयन्ति की हिन्दी अनुवादित कथा' का अध्ययन कर नल–दमयन्ती की प्रेम कथा को समझा व संबंधित जानकारी प्राप्त किया।

इसके अतिरिक्त विभिन्न वेबसाइट्स का भी अवलोकन किया जिसके अध्ययन से मुझे शोध विषय में सरल वर्गीकरण करने के साथ ही इसे पूर्ण करने में सफलता प्राप्त होगी।

परिकल्पना

प्रत्येक अनुसंधान कार्य की सफलता व उसकी वस्तुनिष्ठा हेतु परिकल्पना की अत्यंत आवश्यकता होती है। जिससे हम अपने शोध के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से प्राप्त कर सकें व शोध विषय पर केन्द्रित रह सकें।

कला के अनेक विषयों में से भारतीय लघु चित्रों में नल–दमयन्ती की कथा पढ़ने पर इस विषय पर बने पहाड़ी लघु चित्रों ने मेरी जिज्ञासा को और अधिक बढ़ाया। लघु चित्र बहुत सुंदर, व आकर्षक रंग योजना, हस्त निर्मित और आकार में छोटे हैं। इनके रंग भी खनिज रंगों, कीमती पत्थर, नील, शंख व शुद्ध सोने और चाँदी से निर्मित किये जाते थे। आज भी ये रंग कुछ चित्रकार प्रयोग में लेते हैं जो पूर्व की निम्न प्रकार की शैलियों में देखने को मिलते हैं– पाल, ओडिशा, जैन, मुगल, राजस्थानी तथा पहाड़ी शैली इत्यादि।

मैं अपने शोध अध्ययन में पहाड़ी शैली की उप शैली कांगड़ा में बने नल–दमयन्ती लिखित साहित्य पर आधारित लघु चित्रों का सौंदर्यात्मक विवेचन करूँगी जो प्रेम और रस का उत्कृष्ट उदाहरण है तथा इस कला के प्राचीन स्वरूप को भी सबके समक्ष लाने का पूर्ण प्रयास करूँगी।

उद्देश्य

एक शोधकर्ता को अपना शोध प्रारम्भ करने से पूर्व अपने निर्धारित उद्देश्य का सर्वप्रथम ज्ञान होना चाहिए कि वह किस उद्देश्य से शोध कार्य कर रहा है।

पहाड़ी लघु चित्रों में काव्य की विवेचना करना व प्रकाश में लाना मेरा उद्देश्य होगा। कांगड़ा शैली में चित्रित नल–दमयन्ती पर आधारित चित्रण किस प्रकार से हुआ है उसके बारे में जानना मेरा उद्देश्य होगा। विभिन्न पहाड़ी शैली की पुस्तकों में से नल–दमयन्ती पर हुए कार्य को अपने शोध द्वारा एक सूत्र में बांधना भी मेरा उद्देश्य होगा। नल–दमयन्ती कृतियों का सौंदर्यात्मक अध्ययन करना ही मेरे शोध का मुख्य उद्देश्य है जो भविष्य में शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

चर

1. कला शिक्षक
2. कला विद्यार्थी
3. कला प्रशंसक एवं कला समीक्षक
4. सहपाठी
5. संग्रहालय
6. कला संग्रहकर्ता
7. पुस्तकें
8. भारतीय पुरातत्व विभाग/पुस्तकालय
9. इन्टरनेट

कार्य प्रणाली

- **अनुसंधान अभिकल्प** :– मेरा शोध कार्य पहाड़ी लघु चित्रों से संबंधित सौंदर्यात्मक, कलात्मक एवं वर्णात्मक अध्ययन पर आधारित होगा।
- **प्रदत्त संकलन** :–
    1. **प्राथमिक**– जम्मू संग्रहालय में संग्रहित नल–दमयन्ती विषय पर आधारित लघु चित्रों के मौलिक चित्र एवं संबंधित स्थान का भ्रमण।
    2. **द्वितीयक**– साक्षात्कार, लेख, पुस्तकें, प्रकाशित पत्र–पत्रिकायें, समाचार पत्र, वेबसाइट्स व जम्मू संग्रहालय।

प्रतिदर्श आकार

मेरे द्वारा संग्रहालय से लगभग 70–80 नल–दमयन्ती लघु चित्रों का चयन किया जायेगा। ये पहाड़ी लघु चित्र कला परम्परा का प्रतिनिधित्व करेंगे।

प्रदत्त संकलन की प्रकिया

मेरी प्रदत्त संकलन की प्रकिया कलाकृतियां, चर्चाओं व विवेचनाओं पर आधारित होगा।

सीमा

प्रत्येक शोध कार्य की एक सीमा होती है। मैं शोध कार्य की सीमा अवधि एकत्रित प्रदत्तों के आधार पर कार्य पूर्ण करने का प्रयास करूँगी।

<u>कांगड़ा लघु चित्रों में नल–दमयन्ती का सौंदर्यात्मक विवेचन</u>

<u>विषय सूची</u>

भूमिका :– काव्य और चित्रकला।

प्रथम अध्याय :– 1.1– पहाड़ी शैली की भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि।

1.2– पहाड़ी लघु चित्रों में कांगडा शैली का उद्भव एवं विकास।

द्वितीय अध्याय :– 2.1– रीतिकालीन काव्य में नल–दमयन्ती का विवेचन।

2.2– कांगड़ा लघु चित्र शैली में नल–दमयन्ती का उद्भव।

तृतीय अध्याय :– कांगड़ा शैली में नल–दमयन्ती चित्रण की परम्परा।

चतुर्थ अध्याय :– कांगड़ा लघु चित्रण में नल–दमयन्ती का चित्रयोजनात्मक अध्ययन।

4.1– रेखा

4.2– रूप

4.3– रंग

4.4– तान

4.5– पोत

4.6– अंतराल

पंचम अध्याय :– नल–दमयन्ती लघु चित्रों का नव रसों के आधार पर सौंदर्यात्मक अध्ययन।

उपसंहार :– भारतीय लघु चित्रों में कांगड़ा शैली का योगदान।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

- हिन्दी
- अंग्रेजी
- शोध पत्र–पत्रिकायें
- समाचार पत्र
- वेबसाइट्स

- चित्र सूची

परिशिष्ट :–

- विभिन्न कला समीक्षकों के विचार।
- तकनीकी शब्दों का अर्थ।
- समाचार पत्र।

अनुसंधान अभिकल्प :–

भूमिका के अंतर्गत काव्य और चित्रकला की सामान्य पृष्ठभूमि प्रस्तुत करूँगी। पहाड़ी चित्रकला में काव्य, संगीत और चित्रकला का समन्वय संसार भर की कलाओं में एक अद्वितीय उपलब्धि है। काव्य और चित्रकला के समन्वय के पीछे भारतीय संस्कृति का अद्भुत दर्शन देखने को मिलता है जिसको मैं भूमिका के माध्यम से प्रस्तुत करूँगी।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत मैं पहाड़ी शैली की भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को प्रस्तुत करूँगी। पहाड़ी चित्रकला के नाम से ही पता चलता है कि यह भारत के पहाड़ी क्षेत्रों में क्रियान्वित होती है। पहाड़ी शैली में अनेक उप–शैलियां प्राप्त होती हैं जिसमें से कांगड़ा और बसोहली मुख्य स्थान रखती है। इसी के साथ–साथ गुलेर, चम्बा, नुरपुर, विलासपुर इत्यादि शैलियाँ भी प्राप्त होती हैं और जो अब सामूहिक रूप से पहाड़ी चित्रकला शैली के रूप में जानी जाती है। पहाड़ी शैली के चित्रों में मुख्य रूप से प्रेम ही दृष्टिगोचर होता है। इसी के साथ–साथ मैं पहाड़ी लोगों के सामाजिक जीवन का अध्ययन करूँगी। प्रथम अध्याय के द्वितीय चरण में पहाड़ी लघु चित्रों में कांगड़ा शैली के उद्भव एवं विकास का वर्णन करूँगी। कांगड़ा स्कूल महाराजा संसार चंद (1765–1823 ई.) के संरक्षण में पहाड़ी चित्रकला का सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया। कांगड़ा शैली के लघु चित्र नाजुक, कोमल व भावपूर्ण होते हैं।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत रीतिकालीन काव्य में नल–दमयन्ती का तर्क–वितर्क के आधार पर विवेचन (भली–भाँति आशय व्यक्त करना) करते हुए कांगड़ा लघु चित्र शैली में नल–दमयन्ती का

उद्भव एवं विकास को प्रस्तुत करूँगी। केशवदास द्वारा लिखित नल–दमयन्ती की प्रण्यकथा कांगड़ा शैली में चित्रित किये गये हैं जिसमें हमें चित्रों के साथ–साथ काव्य भी देखने को मिलता है। कांगड़ा में काव्य, संगीत और चित्रकला का समन्वय देखने को मिलता है जो इस शैली का अद्भुत गुण है।

तृतीय अध्याय में कांगड़ा शैली में नल–दमयन्ती चित्रण की परम्परा का अध्ययन करूँगी जिसमें मैं चित्रों के माध्यम से काव्य तथा चित्रों का भावात्मक पक्ष का विस्तारपूर्वक अध्ययन करूँगी।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत नल–दमयन्ती का चित्रयोजनात्मक अध्ययन करूँगी जिनका मैं कला तत्वों (रेखा, रूप, रंग, तान, पोत, अंतराल) के आधार पर चित्रों की विशषतायें प्रस्तुत करूँगी।

पंचम अध्याय में नल–दमयन्ती लघु चित्रों का नव रसों (श्रृंगार, हास्य, करूण, वीर, रौद्र, भयानक, वीभत्स, अद्भुद, शांत)के आधार पर सौन्दर्यात्मक अध्ययन करूँगी जिसमें कथात्मक तत्वों को व्यक्त करने के साथ उपमाओं का भी वर्णन किया जायेगा।

उपसंहार के अंतर्गत भारतीय लघु चित्रों में कांगड़ा शैली का योगदान बताते हुए नल–दमयन्ती चित्रण का समकालीन कला में योगदान पर चर्चा करूँगी।

दिनांक :– **सोनाली गुप्ता**

(शोधार्थी)

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

- अग्रवाल, श्यामबिहारी : 1999, भारतीय चित्रकला का इतिहास, रूपशिल्प प्रकाशन इलाहाबाद।
- अग्रवाल, श्यामबिहारी : भारतीय चित्रकला और काव्य, किताब महल, इलाहाबाद, प्रथम संकरण।
- काला, सतीश चन्द्र : 1936, भारतीय चित्रकला, बैलवेडियर प्रेस, इलाहबाद।
- कुमार, सुधीर : 2001, रीतिकाव्य के विविध आयाम, ईशा ज्ञानदीप, दिल्ली।
- द्विवेदी, प्रेमशंकर : 2007, भारतीय चित्रकला के विविध आयाम, न्यू साकेत कॉलोनी, बी.एच.यू. वाराणसी–5, दूरदभाषा।
- वर्मा, महेन्द्र : 2006, भारतीय चित्रकला की परम्परा, भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली।
- त्रिवेदी, अशोक कुमार : 2008, हिन्दी काव्य साहित्य की महान विभूतियाँ, एस. आर. साइन्टीफिक पब्लिकेशन आगरा।

Bibliography :-

- Archer, W.G. - 1953, Kangra Painting, London.
  1952, Indian Painting in Punjab Hills, London.
  1961, Indian Miniatures, New York.
- Dahejia, Harsha V. - 2011, Pahari Paintings of An Ancient Romance; The Love Story of Usha Anirudha, D.K. Print World, New Delhi.
- Goswamy, B.N. - 1975, Pahari Paintings of The Nal Damayanti Theme, National Museum, New Delhi.
  2009, Pahari Masters, Court-Painters of Northern India, Niyogi Books, New Delhi.
- Khandalvala, Karl - 1958, Pahari Miniatures Painting, Bombay.
- Ohri, Vishwa - 1991, On the origins of Pahari painting, Shimla Indian

Chandra Institute of advanced study.

- Rahi, Onkar - 2013, Growth & Tradition of Pahari Miniature Painting, National Publishing House, Delhi.
- Rami, Saroj - 2012, Pahari Chitrakala ka Anusheelan, Kala prakashan, Varanasi.
- Roy, C. Craven - 1990, Ramayan Pahari Paintings, Marg Publication,Bombay.
- Reiff, Robert - 1959, Indian Miniatures- The Rajput Paintings, London.
- Seyeller, John - 2013, Pahari Paintings : In The Jagdish & Kamal Mittal Museum of Indian Art, Hyderabad Publication.
- Singh, Chandramani - 1982, Centres of Pahari Paintings, Abhinav Publications, New Delhi.

Websites :-

- en.wikipedia.org
- books.google.co.in
- newjacquelinehouseboats.com
- www.pinterest.com
- www.cultureopedia.com
- oliverbrothersonline.com
- www.india-expedition.com
- www.issuu.com
- www.exoticindiaart.com

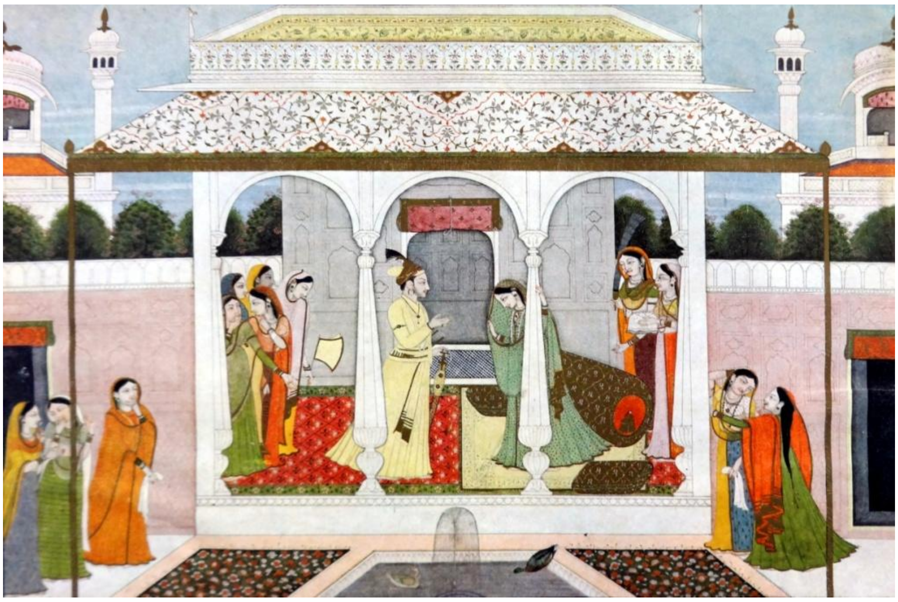

Figure 1 The Conversation of Nala-Damayanti, 17th- 18th Century, Jammu Museum.

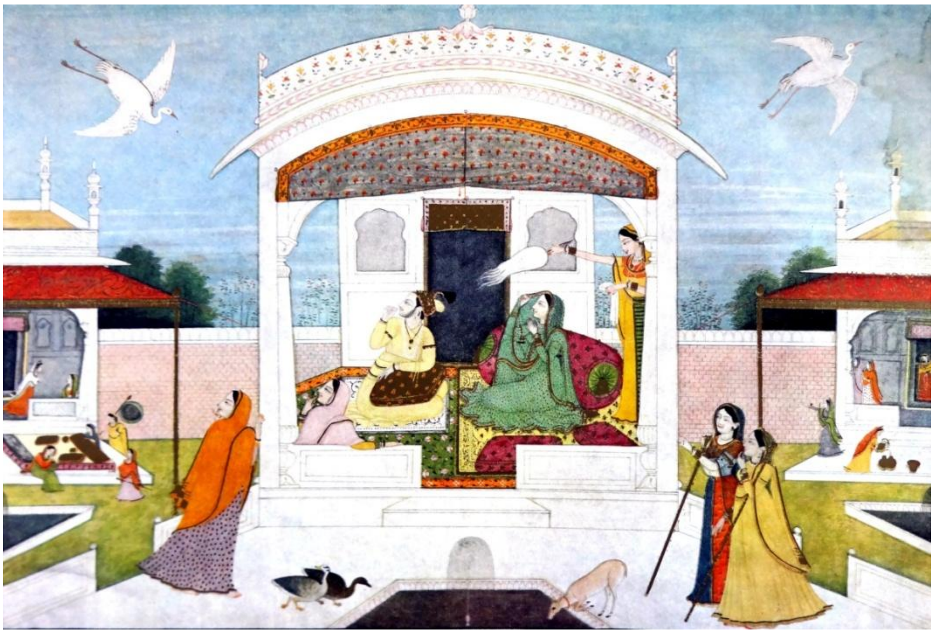

Figure 2 The Swan speaks again to Nala- Damayanti, 17th- 18th Century, Jammu Museum.

Figure 4 The God's going to Damyanti's Svayamwara, 17th- 18th Century, Jammu Museum.

Figure 5 Damayanti receiving a gift from Indra, 17th- 18th Century, Jammu Museum.